Total No. of Printed Pages—5

3 SEM TDC HINH (CBCS) C–5

2025

(Nov/Dec)

HINDI

(Core)

Paper : C–5

(छायावादोत्तर कविता)

Full Marks : 80
Pass Marks : 32

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×8=8

(क) कवि ने 'खेत के दृश्य' कविता में किसके सौन्दर्य का चित्र खींचा है?

(ख) 'कालीदास' नामक कविता का रचयिता कौन है?

(ग) रामधारी सिंह 'दिनकर' किस वर्ग के कवि हैं?

(घ) 'गीतों के राजा' कविता में किस भक्ति का भाव मुखरित हुआ है?

(ङ) अज्ञेय के अनुसार 'तार सप्तक' का क्या अर्थ है?

(च) 'लुहार से' कविता में कवि ने किसका परिचय दिया है?

(छ) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म कब हुआ था?

(ज) 'पन्द्रह अगस्त' कविता की रचना कब हुई थी?

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 4×4=16

(क) 'खेत का दृश्य' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

(ख) माखनलाल चतुर्वेदी का साहित्यिक परिचय दीजिए।

(ग) 'गीत फ़रोश' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं? बताइए।

(घ) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की काव्यकला को संक्षेप में लिखिए।

(ङ) छायावाद के चार स्तंभ कौन हैं? नामोल्लेख कीजिए।

3. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×4=32

(क) "वर्षा ऋतु की स्निग्ध भूमिका
प्रथम दिवस आषाढ़ मास का
देख गगन में श्याम घन-घटा
विधुर यक्ष का मन जब उचटा
खड़े-खड़े तब हाथ जोड़कर
चित्रकूट से सुभग शिखर पर
उस बेचारे ने भेजा था।"

अथवा

"शत-शत निर्झर-निर्झरणी-कल
मुखरित देवदारु-कानन में
शोणित-धवल भोज-पत्रों से
छायी हुई कुटी के
रंग-बिरंगे और सुगंधित
फूलों से कुन्तल की साजे।"

(ख) "पर, गुलाब-जल में गरीब के अश्रु राम क्या पायेंगे?
बिना नहाये इस जल में क्या नारायण कहलायेंगे?
मनुज-मेघ के पोषक दानव आज निपट निर्द्वन्द्व हुए।
कैसे बचें दीन? प्रभु भी धनियों के गृह में बन्द हुए।"

अथवा

"चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर, हे हरि, डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।"

(ग) "इन्हीं के मर्म को अनजान
शहरों की ढ़की लोलुप विषैली
वासना का साँप
डंसता है।
इन्हीं में लहराती अल्हड़
अपनी संस्कृति की दुर्दशा पर
सभ्यता पर भूत
हँसता है।"

अथवा

"चिकनी हो, रेशम काले-सी
पतली हो, ठहरी, पतली हो
मकड़ी के फैले जाले-सी;
और दर्द या शीत सरीखी,
हो बे-दर्द, चढ़ाते सूली
जल्लादों के गीत सरीखी;"

(घ) "चुप रहो ज़रा सपना पूरा हो जाने दो,
घर की मैना को ज़रा प्रभाती गाने दो,
खामोश धरा, आकाश, दिशायें सोयी हैं,
तुम क्या जानो क्या सोच रात भर रोयी है?"

अथवा

"विषय शृंखलाएँ टूटी हैं
खुली समस्त दिशाएँ,
आज प्रभंजन बनकर चलतीं
युग-बंदिनी हवाएँ।
प्रश्न चिह्न बन खड़ी हो गईं
यह सिमटी सीमाएँ
आज पुराने सिंहासन की
टूट रही प्रतिमाएँ।"

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $12 \times 2 = 24$

(क) नागार्जुन के जीवन तथा काव्य सम्बन्धी दृष्टिकोण पर प्रकाश डालिए।

(Continued)

(ख) गिरिजा कुमार माथुर के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी कविता 'रात हेमंत की' का सारांश लिखिए।

(ग) अज्ञेय की प्रयोगवादी कविता की शिल्पगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

(घ) भवानी प्रसाद मिश्र का परिचय देते हुए 'गीत फ़रोश' कविता का सार लिखिए।

★★★